॥ श्रीहरिः ॥

स्वामी गोविन्ददेव गिरि

आचार्य- डी.लिट्. (मानद)

उपाध्यक्ष, श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट, मथुरा

कोषाध्यक्ष, श्रीरामजन्मभूमि तीर्थक्षेत्र (न्यास), अयोध्या

'धर्मश्री', सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे ४११०१६
दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९
फॅक्स : (०२०) २५६७२०६९
swamigovindgiriji@gmail.com

॥ श्री सीता राम ॥

श्रीरामजन्मभूमि तीर्थक्षेत्र (अयोध्या) कोषाध्यक्ष का रामभक्तों से निवेदन

भूमिका

भगवान श्री सीताराम प्रभु की आत्यंतिक कृपा से लगभग 5 शताब्दियों का भीषण संघर्ष पूर्ण हुआ। साधु संत महात्मा एवं प्रखर रामभक्तों के अनवरत प्रयास तथा बलिदानों से श्री अयोध्याधाम में श्रीरामजन्मभूमि के पवित्र स्थान पर भगवान रामलला का भव्य मंदिर खड़ा हुआ। प्रभु की प्राण प्रतिष्ठा हुई और ध्वजारोहण तक सभी कार्य सोत्साह संपन्न हुए। रामभक्तों के लिए यह अत्यंत आनंददायी पर्व रहा।

ऐसे मंगलमय वातावरण में अयोध्या मंदिर में घटित अविश्वसनीय अर्थ अपहार की घटना ने रामभक्तों का हृदय विदीर्ण कर दिया। कोटि-कोटि भाविकों द्वारा अत्यंत श्रद्धापूर्वक रामलला की हुंडी में समर्पित की हुई धनराशि की गिनती करते समय चोरी करने का जघन्य महापाप कुछ लोगों ने किया। चढ़ावा-चोरी का यह क्रम पिछले काफी समय से चल रहा था, यह भी प्रकाश में आया। यह सभी रामभक्तों के लिए अत्यंत दुखदायक, भीषण पीड़ादायक है। इससे हम अत्यंत आहत, दुखी एवं लज्जित हैं। श्रीमद् भागवत की पूर्व निर्धारित कथा पूर्ण करके दिनांक 5 जुलाई को मैं श्री अयोध्याजी पहुँच रहा हूँ। श्रीरामजन्मभूमि तीर्थक्षेत्र न्यास के कोषाध्यक्ष के रूप में मेरा यह विनम्र निवेदन सभी रामभक्तों के लिए समर्पित है-

1. *श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र न्यास के न्यासी अथवा कोषाध्यक्ष पद के लिए मैंने ना कभी किसी से निवेदन किया, ना कोई प्रयास किया। प्रभु श्रीराम की सेवा किसी भी रूप में करते रहने में धन्यता एवं आनंद का अनुभव तो है ही। मेरी सतत प्रार्थना है कि प्रभु कृपा से सभी का मंगल हो।*

2. *मैं लगभग हर महीने-डेढ़ महीने में न्यास के कार्यार्थ अयोध्या आता रहता हूं। मेरे विमान अथवा अन्य प्रवास के लिए मैंने अबतक एक भी रुपया व्यय के रूप में न्यास से लिया नहीं है। प्रभु श्रीराम की निरपेक्ष सेवा के रूप में यह कार्य करने में धन्यता का अनुभव होता है।*

3. *कोषाध्यक्ष के दायित्व के रूप में कोष में जमा की गई राशि का आरंभ से लेकर अबतक लेखा परीक्षण (Audited) आय-व्यय का हिसाब सुरक्षित है जो अधिकृत व्यक्तियों द्वारा कभी भी जाँचा जा सकता है।*

4. *कोषाध्यक्ष के नाते आय-व्यय का हिसाब रखना मेरा कर्तव्य है। मैं निरंतर प्रवास में रहता हूँ, इसलिए हमारे पुणे कार्यालय के चार्टर्ड अकाउंटंट सहयोगी हर महीने अंतिम ४-५ दिन अयोध्या आकर आय-व्यय की जाँच करते हैं तथा न्यास के कार्यालयीन साथियों को सहयोग एवं आवश्यक दिशा निर्देश भी*

करते रहते हैं। उन्हीं के भरोसे मैं हिसाब के बारे में निश्चिंत रह पाता हूँ।

5. न्यासी बनने के समय से अबतक स्वयं मैंने किसी से भी कुछ भी नगद राशि अथवा वस्तुरूप भेंट मंदिर के लिए स्वीकार नहीं की। (इसमें दो अपवाद है १) मेरी दिवंगत अतिवृद्ध बड़ी बहन ने रू. ११,००० दिये तथा श्रीमती नीलम गोऱ्हेजी ने चांदी की १ किलो की ईंट पुणे में प्रदान की। इन दोनों की रसीदें उन्हें तुरंत भेज दी गई थी। इसके अलावा कभी किसी व्यक्ति से चेक के अलावा मैंने कभी भी कुछ भी ग्रहण नहीं किया।

6. राम मंदिर की ओर से किया जाने वाला व्यय सीधे बैंक से होता है। मैं अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता नहीं हूँ। इसलिए वहाँ पर मेरे हस्ताक्षर नहीं चलते हैं। हमारे पास कोई चेकबुक नहीं है। पेमेंट कभी कैश में नहीं होते, सीधे बैंक ट्रांसफर के माध्यम से ही होते हैं।

7. रामभक्तों के द्वारा हुंडी में समर्पित चढ़ावा जहाँ गिना जाता है उस क्षेत्र से मेरा आरंभ से ही कभी कोई संबंध नहीं रहा। मेरा निवास पुणे में है। कथाओं के निमित्त प्रवास निरंतर चलता है, चढ़ावा गिनने का कार्य प्रतिदिन का दैनिक कार्य है। उसे स्थानिक न्यासी बंधु ही आरंभ से देखते रहे हैं। उसका SOP (गणना प्रक्रिया) के लिए संयुक्त रूप से निर्धारित दिशा-निर्देश) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के साथ मिलकर उन्होंने ही बनाया है। वह मुझे पिछले महीने पहली बार दिखाया गया।

8. दुर्भाग्यपूर्ण चोरी कितनी हुई, कब हुई, कैसे हुई, यह जाँच का विषय है। इस महापाप की जाँच गहराई से होनी चाहिए। निष्पक्ष होने चाहिए. जाँच एजेंसी पर भरोसा रखना चाहिए । न्यायालय अपना कार्य करेगा। SIT और पुलिस पर हमें विश्वास है। दोषी बचेंगे नहीं। सभी को जाँच और न्याय व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए।

9. हम मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु राम के अनन्य भक्त हैं, हम सत्य के साथ हैं। मर्यादा का पालन करते हैं। हमारा आग्रह है कि पुलिस और जाँच एजेंसी दोषी को पकड़ें। अपराधी चाहे जितना भी बड़ा क्यों ना हो, नाम और पद का विचार किए बिना उसे न्यायालय से सख्त दंड दिलवाया जाए।

10. मैं न्यास के परम सम्मानिय सदस्यों से करबद्ध प्रार्थना करूंगा कि भविष्य में पूरी सतर्कता और सावधानी बरतने के लिए अभेद व्यवस्था की जाए। विशेषज्ञों की राय लेकर एक ऐसी प्रबंधन प्रणाली प्रतिस्थापित की जाए जिसमें अचूक निरिक्षण हो और दानपात्र में आई राशि की गिनती में पूर्ण पारदर्शिता हो। प्रभु श्री राम के भक्तों द्वारा किसी भी रूप में दिए जाने वाले दान की पाई-पाई का हिसाब सुनिश्चित हो।

हमें विश्वास है भगवान श्रीराम की कृपा से संशय के बादल छटेंगे, अपराध का अंधकार दूर होगा। भविष्य में हमारा प्रयास होगा कि हमारे रामलला का मंदिर विश्व में आदर्श का मंदिर हो। श्रीराम भक्ति की धारा अखंड बहती रहे, हमें रामराज्य लाने तक साधना करनी है। भगवान सनातन धर्म और राम मंदिर की कृति को धूमिल करने के किसी प्रयास को सफल नहीं होने देंगे। ये हमारा अटूट विश्वास है।

धर्म की जय हो। जय श्रीराम।

आषाढ कृ. ४
युगाब्द ५१२८
दि. ०५ जुलाई २०२६

श्री ज्ञानेश्वरपदाश्रित,
स्वामी गोविंददेवगिरि